IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वच्छता निर्माण में परिवार का योगदान :

पर्यवेक्षिका: -
डॉ मंजू झा
(एसोसिएट प्रोफेसर)
समाजशास्त्र विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा

शोध छात्र :-
सुरेन्द्र कुमार पंडित
समाजशास्त्र विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सारांश:-

परिवार समाज की सार्वभौम रचनात्मक इकाई है । यह सदस्यों के व्यक्तित्व की नींव है । मानव मनोवृत्तिया व्यवहार के ढंग एवं आदत परिवारिक पर्यावरण में निर्मित होते हैं । बच्चा जन्म से लेकर सर्वप्रथम परिवार के संपर्क में आता है। संपर्क में आने से बच्चा अनेक व्यवहार को सीखता है किस तरह के खाने के पहले व बाद में हाथ साफ करना शौच क्रिया के बाद हाथ साफ करना है । शौच क्रिया के बाद हाथ साफ करना है , इस तरह परिवार के माध्यम से व्यक्ति स्वच्छता से जुड़े विभिन्न व्यवहारो व जीवन के ढंग में स्वच्छता के व्यवहार को आंतरिकरण करता है और स्वस्थ व्यक्ति के रूप में परिणत होता हैतरह परिवार के माध्यम से व्यक्ति स्वच्छता से जुड़े विभिन्न व्यवहारो व जीवन के ढंग में स्वच्छता के व्यवहार को आंतरिकरण करता है ,और स्वस्थ व्यक्ति के रूप में परिणत होता है ।

कुंजी शब्द :- स्वच्छता ,परिवार ,सार्वभौमिक ,व्यवहार ,पर्यावरण ।

प्रस्तावना :-

स्वच्छता का समाजशास्त्रीय साहित्य में स्वच्छता एवं परिवार विषयक संबंध केंद्रीय महत्त्व रखता है। परिवार व्यक्ति के सामाजिकरण का कार्य करता है, बच्चों को व्यापक समाज में भागीदारी के लिए तैयार करता है और व्यापक संस्कृति का बोध , जिसमें स्वच्छता संबंधित जानकारी सम्मिलित होता है , करता है। अपने शरीर ,वस्त्र ,रहन - सहन ,आवास , आस-पड़ोस एवं जीवन शैली आदि में स्वच्छता की प्रथम सिख बच्चों को परिवार में ही मिलता है । यही वह स्थान है जहां स्वच्छता की आधारशिला तैयार की जाती है , जो भावी जीवन के लिए सार्थक सिद्ध होते हैं ।

परिवार: परिवार व्यक्तियों का अपेक्षाकृत छोटा एवं अस्थाई समूह है , जो विवाह तथा रक्त संबंधों पर आधारित होता है , जिसके सदस्यों में प्राथमिक संबंध होते हैं और जो जीवन की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति से जुड़े होते हैं । इसकी अवधारणा को कुछ महत्वपूर्ण परीभाषाओं के माध्यम से जाना जा सकता है ।

डब्ल्यू .एफ .ऑगबर्न एवं एम .एफ निमकॉफ (ए हैंडबुक ऑफ सोशियोलॉजी : 1957 :459) के अनुसार , " परिवार बिना बच्चों वाले पति-पत्नी या किसी पुरुष या स्त्री में से एक के साथ रहने वाले बच्चों कि थोड़ा - बहुत स्थाई समिति है ।"

डी .एन .मजूमदार (रेस एंड कल्चर ऑफ इंडिया: 1958 :163) ने लिखा है , " परिवार व्यक्तियों का एक समूह है जो एक छत के नीचे रहते हैं , मूल एवं रक्त संबंधी सूत्रों से संबंध होते हैं तथा स्थान , रुचि एवं कृतज्ञता के आधार पर जागरूकता होती है ।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि परिवार व्यक्तियों का एक समूह है । यह विवाह एवं दत्तक - ग्रहण की प्रक्रिया पर आधारित है । यह सदस्य एक- दूसरे से अंत: क्रिया करते हुए जीवन की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति करते हैं ।

स्वच्छता :- स्वच्छता एक सोच विचारधारा मनोवृति व्यवहार एवं आदत है। व्यवहार व आदत यूं ही नहीं बन जाती । स्वच्छता एक व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र के विकास के लिए अत्यंत महत्त्व रखता है स्वच्छता की सभी प्रावधान वह सुविधाएं जो मानव के मल मूत्र एवं कचरा अपशिष्ट पदार्थ आदि का निष्कासन करने में जो प्रक्रिया अपनाते हैं वर्तमान में स्वच्छता को लेकर राष्ट्रव्यापी आंदोलन छिड़ा हुआ है। और यह खुशी की बात है की इसका आगाज राजनीतिक क्षेत्र में हुआ है।

बिंदेश्वर पाठक (स्वच्छता का समाजशास्त्र :2013) का कहना है , " स्वच्छता सामाजिक वचन, जनस्वास्थ्य , परिस्थितिकी गरीबी , लैंगिक समानता , बच्चों के कल्याण एवं लोगों के सशक्तिकरण से समाज की समस्या का समाधान का वैज्ञानिक अध्ययन है , जो दीर्घकालीन

विकासऔर दार्शनिक वह आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के माध्यम से खुशहाल जीवन जीने एवं अन्य के जीवन को बेहतर बनाएं ।

स्वच्छता निर्माण में परिवार का योगदान:-

स्वच्छता एक सीखा हुआ व्यवहार है, जब हमलोग बच्चे होते हैं उस समय परिवार के योगदान बीना हम सब समाज की कल्पना नहीं कर पाएंगे। स्वच्छता की प्रथम सिख बच्चों को परिवार में ही मिलता है।

स्वच्छता निर्माण में परिवार को कुछ बिंदुओं के संदर्भ में समझा जा सकता है :-

1. समाजीकरण बच्चा जन्म लेकर सर्वप्रथम परिवार के संपर्क में आता है परिवार में मां व अन्य सदस्यों के संपर्क में बच्चा अनेक व्यवहारों को सीखता है किस तरह खाने के पहले व बाद में हाथ साफ करना है, शौच- क्रिया के बाद हाथ साफ़ करना है। परिवार विशेष रुप में इस प्रकार संगठित होता हैं।

2. अनुशाशनिक प्रशिक्षण - परिवार वह स्थल है जिसमें सीखने की प्रक्रिया सरल होती है यहाँ व्यक्ति शिशु व बालक एवं युवा आदि के रूप में जन्म के बाद से जीवन पर्यन्त अपने आचरण को अनुशाशन में रखता है इसके विभिन्न अभिकरण , पितृसत्ता, विवाह,अन्य संस्थाएं स्वछता के अनुरूप व्यव्हार करना सिखाते है।

3. आत्म चेतना- जन्म के साथ शिशु में आत्म चेतना या आत्मबोध नहीं होता इसका विकास सर्वप्रथम परिवार के संपर्क में होता है। यहां माता पिता का आपसी संबंध एवं बच्चों की आपसी संबंध विशेष महत्वपूर्ण होता है। शिशु में स्वच्छता के प्रति आत्म चेतना का बोध होता है।आगे चलकर यह व्यक्तित्व का हिस्सा बनता है ।

4. शौच- अवस्था - शिशु को सामाजिक प्राणी बनाने में परिवार का समाजीकरण का शौच अवस्था का स्तर स्वच्छता की धारणा में निहित है। एचएम जॉनसन (समाजशास्त्र: ए सिस्टमैटिक इंट्रोडक्शन:1978:112-132) ने सामाजिक के द्वितीय स्तर में शिशु के 1 से 4 वर्ष तक होने की बात की है। इस स्तर में बच्चा शौच प्रशिक्षण प्राप्त करता है । मां व अन्य सदस्यों की अंतः क्रिया में शौच व स्वच्छता से स्वच्छता से जुड़ी प्रक्रिया को ग्रहण करता है ।

5. सामाजिक परिस्थिति : वर्तमान में सामाजिक परिस्थिति के निर्धारकों में स्वच्छता संबंधी ज्ञान व व्यवहार महत्वपूर्ण है । इसकी शिक्षा जन्म के साथ परिवार में प्रारंभ हो जाती है । शौच क्रिया की प्रक्रिया , जूते - चप्पल की स्थिति एवं आचार विचार आदि का प्रशिक्षण परिवार में हासिल की जाती है ।

6.व्यवहारों में अनुरूपता : परिवार , स्वच्छता के माध्यम से व्यवहारों राज्य अनुरूपता लाती है। परिवारिक स्वच्छता संबंधी प्रशिक्षण - बीना मुख धोए भोजन न करना, खाना के पहले व बाद में साबुन से साफ करना, स्वच्छ वस्त्र धारण करना एवं बिना स्नान के पूजा -घर न जाना आदि से व्यक्ति के व्यवहारों में अनुरूपता आती है।

7.धर्म एवं धार्मिक विश्वास - परिवार धर्म व धार्मिक विश्वास के माध्यम से स्वच्छता की धारणा को मजबूती प्रदान की है परंपरा पर आधारित भारतीय समाज में इसकी भूमिका आज भी विद्यमान है। धर्म पवित्र व अपवित्र की धारणा पर आधारित है । धर्म उन स्वच्छ वस्तुओं , घटनाओं , स्थलों एवं व्यवहार से संबंधित है ,जो पवित्र मानी जाती है । केबल पवित्र को अपनाना ही धर्म है । स्वच्छता को पवित्रता से जोड़ा गया है । ऐसी मान्यता विकसित हुई है की जा सकता है वहां ईश्वर का वास है । शुद्ध वस्त्र जूते चप्पल की स्थिति एवं आचार - विचार आदि को देव स्थानों से जोड़ा गया है । इसकी नीव परिवार में सम्मिलित है । परिवारिक पर्यावरण मैं शिशु व बालक स्वच्छता की पवित्रता को ईश्वर से जुड़े जाने की धारणा को प्राप्त करता है, जो बहुत हद तक जीवन प्रयत्न चलते रहता है। भारतीय त्योहार मैं दिवाली एवं छठ की पवित्रता इसका प्रमाण है ।

साफ सफाई हेतु सरकार और परिवार की पहल : साफ सफाई हेतु राज्य सरकार और केंद्र सरकार ने विशेष ध्यान दिया है , जिसमें विभिन्न मुद्दों के लिए आवश्यकता के अनुरूप योजना बनाई गई है , राज्य सरकार के प्रयासों में भारत सरकार की अहम योगदान है :

कार्यनीति के तत्व :-

जमीनी स्तर पर गहन व्यवहारगत परिवर्तन गतिविधियां चलाने के लिए जिलों की संस्थागत क्षमता को बढ़ाना ।

परिवार के लोग स्वच्छता व्यवहार को अपनाते हैं। घर के सभी सदस्य इसका पालन करता है , स्वच्छ रखने में योगदान देते हैं ।

निष्कर्ष :-

उपयुक्त शोध लेख के आधार पर कहां जा सकता है की स्वच्छता और पर्यावरण संपूर्ण भारत के लिए एक जन जागरूक कार्यक्रम है , लेकिन यह तभी संभव है जब परिवार का प्रत्येक व्यक्ति इसके प्रति जागरूक हो और अपनी आदतों में परिवर्तन ला सके। स्वच्छता निर्माण में विभिन्न विभिन्न मानदंडों में स्वच्छता का मानदंड भी सिखा जाता है । स्वच्छता की सीख व शिक्षा परिवार का आधार है। इसलिए पर्यावरण को स्वच्छ , परिवार में स्वच्छता , नैतिक जिम्मेदारी हम लोगों की है ।

"हर नागरिक का हो ये सपना, स्वच्छ हो सम्पूर्ण भारत अपना"

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. जॉनसन , एच ,एम .(1960) : समाजशास्त्र : ए सिस्टमैटिक इंट्रोडक्शन , एलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड , नई दिल्ली , भारत।

2. सिंह , गोपी रमण प्रसाद .(2018) : स्वच्छता समाजशास्त्र का परिचय , हेरिटेज पब्लिकेशन ,108/110, जलाल मंजिल तिमेकर स्ट्रीक , मुंबई ।

3. डेविस , किंग्सले. (1980) : मानव समाज (अनुवादक -जी के अग्रवाल), किताब महल ,इलाहाबाद ,भारत ।

4. पाठक, बिंदेश्वर (2013) : sociology of sanitation , proceedings of sociology of sanitation , sulabh international , new delhi , india .

5. स्वच्छ भारत - पत्रिका : राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास , संस्थान नई दिल्ली - 2017 .

6. द्विवेदी ,शशांक (2015) : बढ़ता प्रदूषण और घटती पैदावार , योजना , जनवरी 2015 , सूचना भवन , सीजीओ परिसर, गांधी रोड , नई दिल्ली -110003, भारत ।

website :-

7. www. govt. of india .com

8. www. sociology of sanitation .com